International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 19-11-2019; Accepted: 20-12-2019
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 1; January 2020; Page No. 60-61

राजभाषा, राष्ट्रभाषा क्यों नहीं?

डॉ. नीलम त्यागी[1], सोमिता बाजपेई[2]
[1] असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, निम्स वि वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत
[2] भाोध छात्रा, हिंदी विभाग, निम्स विवविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

प्रस्तावना

हिंदी भाषा सदैव अपने ही देश में एक विवादित भाषा रही है। ऐसा नहीं है कि हिंदी के पक्षधर कम हैं अपितु यह तो भारत के अतिरिक्त भी कई देशों में एक बड़े स्तर पर बोली व समझी जाती है। परंतु हिंदी के प्रति भारत के ही कई राज्यों में पराया सा व्यवहार किया जाता है। हिंदी भाषा को लेकर एक प्रश्न मेरे मन मस्तिष्क को सदैव विचलित करता रहा है कि यदि पूरा देश भारत एक विदेशी भाषा को इतने हृदय से स्वीकार कर सकता है कि देश में अंग्रेजी का बोलबाला है व इस भाषा में संप्रेषण को भारतीय गर्व का विषय समझते हैं। मुझे भी इससे कोई आपत्ति नहीं है ग्रहण शीलता तो मनुष्य का मौलिक आचरण है ।

भाषा की राजनीति

प्रश्न यह है कि यदि देश इतना उदार है कि किसी विदेशी भाषा के प्रति उनके मन में इतना सम्मान है तो वही लोग भारत में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा हिंदी को अपनी राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करने के नाम से ही इतने आक्रामक क्यों हो जाते हैं। हिंदी भाषा के प्रति इतना तिरस्कार उनके मन में कहां से और क्यों आया? क्या इसमें भाषागत राजनीति को जिम्मेदार माना जाए या बचपन से ही उनके संस्कारों में हिंदी भाषा के प्रति यह द्वेष है ?

उदाहरण के लिए– हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा का सम्मान दिलाने के लिए केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह जी ने वर्ष २०१६ के १४ सितंबर माह में दिए गए अपने एक साक्षात्कार में हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने के बारे में मात्र एक सुझाव दिया–

अनेक प्रकार की भाषा वह बोलियां हमारे देश की सबसे बड़ी ताकत है परंतु जरूरत है कि देश की अपनी एक भाषा हो जिसके कारण विदेशी भाषाओं को जगह न मिले इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने राजभाषा की कल्पना की थी और राजभाषा के तौर पर हिंदी को स्वीकार किया था ।

मैं माननीय अमित शाह जी के इस वक्तव्य से पूरी तरह सहमत हूं। भारत की विविधता में एकता ही देश की पहचान है परंतु यदि प्रश्न सामने आए कि भारत की भाषा कौन सी है? तो इस प्रश्न का उत्तर हम किसी एक भाषा के नाम के साथ नहीं दे सकते। माननीय अमित शाह जी द्वारा दिए गए साक्षात्कार के तुरंत बाद ही हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने के उनके सुझाव का विरोध शुरू हो गया।

डी एम के अध्यक्ष स्टालिन ने कहा हम लगातार हिंदी थोपे जाने का विरोध कर रहे हैं । हमें अमित शाह के वक्तव्य से आघात पहुंचा है यह देश की एकता को प्रभावित करेगा वह अपना बयान वापस लें।

कांग्रेस के नेता व पुडुचेरी के मुख्यमंत्री वी नारायण स्वामी ने कहा अकेले हिंदी को आगे बढ़ाने की कोशिश देश को एक साथ रखने वाली नहीं है । हमें सभी धर्मों भाषाओं और संस्कृतियों का सम्मान करना होगा मुझे उम्मीद है कि गृहमंत्री दक्षिणी लोगों की भावनाओं का सम्मान करेंगे।

अभिनेता से राजनेता बने कमल हसन के शब्दों में –विविधता में एकता वह एक प्रण है जो हमनें लिया था। जब हमने भारत को एक गणतंत्र बनाया था। अब कोई शाह सुल्तान या सम्राट इस प्रण से मुकर नहीं सकता। हम सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करते हैं परंतु हमारी मातृभाषा सदैव सर्वोपरि है। उन्होंने यह चेतावनी भी दी कि जल्लीकट्टू सिर्फ एक आंदोलन था भाषागत युद्ध उससे कहीं बड़ा होगा।

राष्ट्रभाषा संघर्ष

हिंदी का विरोध और तिरस्कार करने वाले राजनेता व अभिनेता भी स्वयं के व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए स्वयं तो हिंदी भाषा को सीखते व प्रयोग करते हैं। परंतु जनसाधारण के मन मस्तिष्क में हिंदी के प्रति जहर घोलकर राजनीतिक लाभ उठाते हैं। हिंदी मात्र हिंदी दिवस के दिन ही सम्मान पाती है पूरा देश इस दिन तो बड़ी–बड़ी संगोष्ठी का आयोजन करता है और हिंदी के सम्मान में बड़ी–बड़ी बातें की जाती है। वर्षभर हिंदी के प्रचार प्रसार के कार्यों के वादे किए जाते हैं परंतु स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भी हमने कभी हिंदी को उतनी गंभीरता से नहीं लिया जिसकी वह अधिकारी थी ।

महर्षि दयानंद के शब्दों में मेरी आंखें तो उस दिन को देखने के लिए तरस रही हैं जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक सब भारतीय एक भाषा को समझने और बोलने लग जाएंगे अनुवाद तो विदेशियों के लिए होता है।

स्वतंत्रता के समय से ही जो देश की एकता के प्रति संकल्पित महान विभूतियां थी। उन सभी ने देश की एक ही मुख्य भाषा होने पर बल दिया। जिससे कि हम विदेशी भाषा की दासता से बच सकें। महत्वपूर्ण बात यह भी है कि उन लोगों में अधिकतर लोगों की स्वयं की मातृभाषा हिंदी नहीं थी। जिसमें महात्मा गांधी जी का नाम प्रमुख रूप से लिया जा सकता है। यह वह लोग थे जिनके लिए देश ही सर्वोपरि था। जो यह जानते थे कि देश को एकता के सूत्र में बांधने का मात्र विकल्प हिंदी को प्रोत्साहित करना है।

बरसों से किए जा रहे लगातार प्रयासों के उपरांत भी हिंदी भारत के कई राज्यों में आज भी तिरस्कार झेल रही है क्योंकि कुछ लोग व्यक्तिगत स्वार्थों की सिद्धि के लिए देश को एक होने नहीं देते।

राजनीतिक स्वार्थ सिद्धि पर मुझे आश्चर्य नहीं परंतु दिल्ली प्रदेश की निवासी होने के कारण मैंने हिंदी के प्रति यहां अनोखा व्यवहार देखा है। राजधानी होने के कारण यहां पर भारत के विभिन्न प्रांतों के लोग रहते हैं। व अन्य प्रांतों के लोगों के साथ संप्रेषण के लिए हिंदी का प्रयोग करते हैं क्योंकि दैनिक कार्यों के लिए उनको जिन लोगों से संप्रेषण की आवश्यकता होती है। उदाहरण के तौर पर सब्जी वाला रिक्शावाला राशन की दुकान

वाला या गृह कार्य में सहायता के लिए रखे गए लोग अंग्रेजी नहीं जानते तो अन्य प्रांतों के लोग भी इनसे हिंदी में बात करते हैं। और यदि प्रांतीय लोग हिंदी बोलते समझते हैं इसमें संप्रेषण भी करते हैं तो राष्ट्रभाषा के नाम पर हिंदी सुझाए जाने मात्र से इतने आक्रामक क्यों हो जाते हैं ?

इस कारण ही स्वामी दयानंद सरस्वती राजा राममोहन राय और केशव चंद्र ने तथा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी इसे राष्ट्रभाषा का सम्मान दिलवाने के लिए जीवन पर्यंत संघर्ष किया तथा जन–जन तक हिंदी को पहुंचाने का प्रयास किया ।

इस प्रयासों के बाद भी अंततः भाषा की यह दशा क्यों है इस संदर्भ में डॉक्टर भीमसेन निर्मल के लेख दक्षिण के लिए नई नहीं है हिंदी का उल्लेख आवश्यक है ।

अंग्रेजों के आगमन से पूर्व समस्त देश में प्रादेशिक भाषाओं के साथ साथ हिंदी का अस्तित्व था अंग्रेजों ने अपनी कूटनीति द्वारा इस गठबंधन को तोड़कर हिंदी के स्थान पर अंग्रेजी को लाने का प्रयास किया और यह गलतफहमी पैदा कर दी कि हिंदी कभी भारत की सर्व देशिक भाषा नहीं रही है।

यह सर्वविदित है कि कोई भी क्रांति आपसी संवाद के बिना संभव नहीं, पूरे भारत में स्वतंत्रता के लिए क्रांति ने जो बृहद रूप लिया था उसकी कर्णधार हिंदी भाषा ही थी। इस क्रांति के द्वारा ही भारत ने एकजुट होकर अंग्रेजी शासन की जड़ों को हिला दिया था। सिख मराठी गुजराती बंगाली ना होकर सभी मात्र भारतीय थे। इस एकता ने ही हमें स्वतंत्रता का सूरज दिखाया था। क्या पुनः हम सब मात्र भारतीय नहीं हो सकते? क्या हमारी राजभाषा हिंदी राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती? किसी भी परिदृश्य को बदलने के लिए प्रयास करना होता है। हमें अपने देश को विश्व पटल पर एक रूप प्रस्तुत करने के लिए यह प्रयास अवश्य ही करना होगा । अंत में हिन्दी के सम्मान पर मेरे द्वारा रचित कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार है :–

हिंदी मैं तुझको नहीं मरने दूंगी,
बहुत ताप संताप झेलकर तूने देश बचाया है।
देश के छोटे टुकड़ों को एक राह पर लाया है,
तू अधिकारी है, जिस पद की वह पद तुझे दिलवाऊंगी।
तेरे अस्तित्व से अब तक कितना ही खिलवाड़ हुआ,
इतना बदला इतना परखा फिर भी ना तुझे स्वीकार किया।
तेरा अपना घर है भारत फल फूल यहां निर्भय होकर,
तू राष्ट्र की अक्षुण्य धरोहर है क्या पाएंगे तुझको खोकर।
इतना सब कुछ सह कर भी तुने नित गीत खुशी के गाए है,
एक दिन यह तुझको मानेंगे जो लोग अभी भरमाये हैं।

संदर्भ सूची

1. श्री शंकर दयाल सिंह, राजभाषा हिंदी संरचना और व्यवहार, हिंदी राष्ट्र भाषा राजभाषा जनभाषा, २०१६,१७–१६
2. अमित शाह जी का वक्तव्य, एन डी टी वी पर प्रसारित, हिंदी दिवस राष्ट्रभाषा हिंदी, २०१६, १४ सितंबर।